अंधेरे कोने

ओमप्रकाश तिवारी

अंधेरे कोने

ओमप्रकाश तिवारी

अनुक्रम

भाग – एक : देश विच कंट्री	3
भाग – दो : गगन कुसुम की ख्वाहिशें	32
भाग – तीन : रपटीली राहों के पथिक	60
भाग – चार : उनके कल्चर की कॉमन बात	85
भाग – पाँच : पथरीली जमीन पर सपनों की खेती	105
भाग – छह : छंटनी की तलवार तले जीवन का पौधा	130
भाग – सात : कशिश और तपिश	154
भाग – आठ : आग का दरिया है डूब कर जाना है	183
भाग – नौ : श्लीलता और अश्लीलता के बीच	213
भाग – दस : भैया का भाइंग	223
भाग – ग्यारह : करुणा और दया के मुखौटे	233
भाग – बारह : ख्वाबों के अफसाने का फसाना	244
भाग – तेरह : आंचल में सूरज की चाहत	261

भाग - एक

देश विच कंट्री

सॉरी, यू आर नॉट सूटेबल फॉर माई टीम

उसके कहने पर अमर को आश्चर्य नहीं हुआ। वह मानसिक रूप से इस तरह के हालात के लिए तैयार था। वह जानता था कि यहां पर उसकी दाल गलने वाली नहीं है। कुछ देर चुप रहने के बाद अमर ने पूछा कि क्या मेरी कहानी अच्छी नहीं है?

- अच्छी है लेकिन

- लेकिन

- इफ यू डांट माइंड मिस्टर अमर तो एक बात कहूँ?

अमर कुछ बोला नहीं। वह सामने वाले को केवल देखता रहा। सामने वाले ने कहना जारी रखा।

- सॉरी फ्रेंड, कहना तो नहीं चाहिए लेकिन साफ कहना बेहतर रहता है। यह बात मैं किन्ही और शब्दों में किसी और तरह से भी कह सकता था। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप हकीकत को समझें और अपने आपको सुधारें। आप में टैलेंट है लेकिन इंडिया में उसका उपयोग नहीं हो पाएगा। आप भारत के लिए उपयुक्त आदमी हैं।

- मैं समझा नहीं। अमर ने चौंकते हुए कहा।

- आप तो जानते ही होंगे कि इस कंट्री में दो कंट्री बन गई है। एक में इंडियन रहते हैं तो दूसरे में भारतीय। हालत यह है कि एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए वीजा और पासपोर्ट चाहिए।

- इंडिया और भारत की बात कर रहे हैं आप लेकिन वीजा वाली बात समझ में नहीं आई। अमर ने कहा।

- यू आर भारतीय हैं। आई एम इंडियन। आपका भारत अलग है माई इंडिया अलग। आपके भारत में आने-रहने के लिए मुझे हिंदी का वीजा और पासपोर्ट चाहिए। आपको मेरे इंडिया में आने और रहने के लिए अंग्रेजी का वीजा-पासपोर्ट चाहिए।

- अच्छा। अब समझा। मुझे अंग्रेजी नहीं आती इसलिए आप मुझे अपनी टीम से नहीं जोड़ सकते। इसे आप सीधे-सीधे भी कह सकते थे। इतनी बड़ी भूमिका बांधने की क्या जरूरत थी? हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि बांधे बनिया बाजार नहीं लगती। एक और कहावत कही है कि घी दिए बाभन नरियाई।

सही है कि मुझे अंग्रेजी नहीं आती। लेकिन इसका मुझे कोई अफसोस नहीं है। मेरा भारत मुझे अच्छा लगता है। मुझे भारतीय होने पर गर्व है।

अमर ने कुर्सी से खड़ा होते हुए कहा।

- मैं जानता हूँ इसीलिए कह रहा हूँ कि आप हमारी टीम के सदस्य नहीं हो सकते हैं।

- आश्चर्य है जनाब। आप कमाते भारत में हैं और रहते इंडिया में हैं। इंडियन होने का यदि आपको गर्व है तो भारत में क्यों आते हैं? भारत किसी इंडिया का उपनिवेश नहीं है। अमर ने सामने वाले की आंखों में आंखें डाल कर कहा।

- आपकी बात सही है लेकिन यह ग्लोबलाइजेशन का जमाना है। आल वर्ल्ड कन्वेंटेड ए विलेज। जिसके पास दिमाग है वह कहीं भी जा सकता है। रह सकता है। कमा सकता है। व्यवसाय कर सकता है।

उसने गर्व और आत्मविश्वास से अमर से कहा।

- आप कहना चाहते हैं कि हमारे पास दिमाग नहीं है? अमर ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा।

- नहीं, मैं कहना चाहता हूँ कि आप उसका उपयोग नहीं करना चाहते। उसका जवाब था।

- मुझे दासता से नफरत है। मैं किसी भाषा का गुलाम नहीं होना चाहता। अमर ने अभिमान से कहा।

- तो आप पिछड़ जाएंगे। शायद हाशिए पर भी जगह न मिले। उसने लगभग चेतावनी वाले लहजे में कहा।

- अपने ही देश में बेगाने। अपने ही देश में हाशिए पर। अपने ही देश में शोषण। अपने ही देश में हंसी के पात्र बन गए हैं हम भारतीय। हम भारतीय जिनकी तादाद ज्यादा है उनका शोषण मुट्ठी भर अंग्रेजी के विदूषक कर रहे हैं। सोच कर खुद पर शर्म आती है। हम भारतीय इतने नपुंसक कैसे हो गये?

- ब्रदर इतना मान लीजिए कि आपको यदि सफल होना है, तरक्की करनी है तो अंग्रेजी भाषा से आप भाग नहीं सकते। यह बात यदि आप पहले समझ लिए होते तो आज आप मेरी टीम के सदस्य होते और लाखों

रुपये महीना कमाते। आपकी पूरी लाइफ स्टाइल बदल जाती। मैं तो कहता हूँ कि आपको अपनी टिपिकल सोच से बाहर आना चाहिए।

- आप फिल्में, सीरियल और विज्ञापन बनाते तो हिंदी में हैं?

- लेकिन हमारे कलाकार भारतीय नहीं इंडियन होते हैं! उन्हें किसी भारतीय के साथ काम करने में दिक्कत होती है।

- यह भी खूब रही। खाते हिंदी की हैं और हगते अंग्रेजी हैं।

- क्या कहा?

- कुछ नहीं! अब मैं चलता हूँ। यहां रुकना खतरे से खाली नहीं है। बिना वीजा और पासपोर्ट के एक भारतीय इंडिया में गिरफ्तार हो सकता है। आपने मुझसे बात की। समझाया। ज्ञान दिया। इसके लिए धन्यवाद।

यह कह कर अमर उसके केबिन से बाहर आ गया।

- साला मैं तो अब भी भारत में नहीं हूँ।

अमर ने फ्लाईओवर पर खड़े होकर अंधेरे को चीरती सड़क की लाइटों को देखते हुए सोचा। उसकी निगाह जहां तक गई पूरी सड़क पीली रोशनी में जगमगाती नजर आई।

यह पुल बनने के बाद अमर इस पर पहली बार आया है। उसकी निगाह सड़क पर गई। सैकड़ों वाहन भागे जा रहे हैं। बरसाती नदी की तरह दौड़ते वाहनों को देखकर अमर ने सोचा कि ये भारतीय भागे जा रहे हैं या इंडियन? क्या सभी इंडियन हैं? फिर भारतीय इस देश में कहां रहते हैं?

अमर की निगाह अपने सामने की होर्डिंग पर गई। बिजली की दूधिया रोशनी में नहाया बोर्ड भव्यता के साथ खड़ा एक उत्पाद का गुण प्रदर्शित कर रहा था। बोर्ड पर लिखी इबारत अंग्रेजी में थी। तस्वीर में हिंदी फिल्म का एक अभिनेता, जिसका पिता भी अभिनेता है और दादा हिंदी का प्रसिद्ध कवि था, संबंधित उत्पाद पर मुग्ध और आत्मसंतुष्टि के भाव से मुस्करा रहा है। अमर के मुंह से अनायास ही निकल गया - एक भारतीय का पोता इंडियन बन गया...। लेकिन यह बेवकूफ किसे बना रहा है? जिस उत्पाद का प्रचार कर रहा है, उसका उपभोक्ता कौन है? भारतीय या इंडियन? शायद दोनों लेकिन कंपनी इसके बहाने भारतीयों को ही निशाना बना रही है।

अमर की निगाह एक और होर्डिंग पर गई। उस पर एक अस्सी वर्षीय नेता की तस्वीर चमक रही है। बोर्ड पर लिखी इबारत अंग्रेजी में है। यह एक चुनावी होर्डिंग है। जिस पर एक पार्टी के भविष्य के प्रधानमंत्री पद के दावेदार नेता जनता से कुछ कहते प्रतीत हो रहे हैं। अमर ने सोचा कि यह नेता किससे वोट मांग रहा है? इसकी सरकार बनी तो यह भारत का प्रधानमंत्री होगा या इंडिया का पीएम? बेचारा यह भी नहीं जानता कि पीएम बनने के लिए वोट भारतीयों से उनकी भाषा में मांगना पड़ता है।

प्रधानमंत्री तो भारतीय ही बनाते हैं। बेशक पद मिलने के बाद वह मिस्टर पीएम बन जाता है और कार्य इंडियनों के लिए करता है। यहीं मात खा गए पीएम इन वेटिंग...। अमर यह सोचकर मुस्कुराया।

- माननीय, तुम्हारी हार तो तय है। वह चहलकदमी करते हुए थोड़ा आगे बढ़ गया। यहां उसकी निगाह फिर एक होर्डिंग पर पड़ गई। इसमें एक युवा नेता अपनी मां की तस्वीर के साथ गंभीर मुद्रा में है। इनकी तस्वीर के साथ वर्तमान प्रधानमंत्री की भी तस्वीर है। पीएम की तस्वीर भी गंभीर मुद्रा में है। मानो यह नेता लोगों से कह रहे हों कि हमें गंभीरता से लेना। हम हैं तो आप हैं। हम नहीं होंगे तो आपका क्या होगा? इसकी भी इबारत अंग्रेजी में है।

अमर ने सोचा सत्तापक्ष की होर्डिंग में तीन तस्वीर, एक महिला, एक युवा और एक बुजुर्ग। जबकि विपक्षी दल के होर्डिंग में एक तस्वीर, वह भी एक बुजुर्ग की। कहते हैं कि यह देश जवानों का है लेकिन उसका नेतृत्व बूढ़े हाथों में है या तो जाने वाला है। ऐसे में तो सत्ता पक्ष चालाक निकला। एक बुजुर्ग के मुकाबले तीन को खड़ा कर दिया। एक युवा और एक महिला। अमर को कहावत याद आई कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। अकेला बुजुर्ग क्या करेगा? युवा जोश महिला की सूझबूझ और बुजुर्ग का नेतृत्व मिलकर भारी पड़ेगा। लेकिन यह लोग भी जिससे वोट मांग रहे हैं, वह तो मतदान केंद्र तक जाता ही नहीं फिर उसकी भाषा का इस्तेमाल क्यों? इनकी सफलता भी भारतीयों के हाथों में है। लेकिन ये उनसे संवाद नहीं करना चाहते। आजाद देश की गुलाम मानसिकता...।

अमर आगे बढ़ा तो इन्हीं दलों और नेताओं के हिंदी में लिखे होर्डिंग मिले। इनके अलावा कई और होर्डिंग मिले। जिसमें विभिन्न कंपनियां अपने उत्पादों को प्रदर्शित कर रखी हैं। किसी की भाषा अंग्रेजी है तो किसी

की हिंदी।

इस फ्लाईओवर के किनारे इतने होर्डिंग देखकर अमर हैरान रह गया। उसे लगा जैसे वह होर्डिंग के जंगल में भटक गया है। जिसके बीच से वाहनों को पानी की तरह बहाती बरसाती नदी रूपी सड़क है...।

आज जहां यह फ्लाईओवर और सड़क है कभी यहां यमुना पुश्ता हुआ करता था। जहां पर भारत का एक भाग बसता था...। लक्ष्मी नगर चुंगी से शकरपुर के स्कूल ब्लाक से होते हुए पांडव नगर रेलवे लाइन तक पुश्ते पर स्लम बस्ती थी।

आज अमर बेहतर नौकरी की तलाश में फिर से दिल्ली और इस इलाके में आया है तो उस समय वह एक अदद नौकरी की तलाश में आया था।

एक गरीब किसान का बेटा दिल्ली जैसे महानगर में पहुंचते ही भौचक्का रह गया था। सड़कों पर दौड़ते वाहन उसे अचंभित कर रहे थे। स्कूल के दिनों में ट्रैफिक नियमों के बारे में पढ़े पाठ और उसके चित्र उसे याद आ रहे थे। उसे पहली बार एहसास हुआ कि पढ़ाई का क्या महत्व है। दिल्ली आने पर उसे उस ट्रैफिक वाले पाठ से काफी मदद मिली। सड़क पर दौड़ते वाहनों के बीच से उसे रास्ता बनाने में इस पाठ ने काफी सहायता की।

अमर यहां अपने बड़े भाई समर के पास आया था। घर के आर्थिक हालात ठीक नहीं थे। वह बारहवीं पास करने के बाद नौकरी की तलाश में दिल्ली आ गया था। समर यहां पर नौकरी करता था। लेकिन कैसी नौकरी करता है यह अमर को मालूम नहीं था। जब वह समर के दिये पते पर पहुंचा तो वह एक फैक्ट्री का निकला था।

समर को यहां पर मजदूरी करते देख अमर को गहरा धक्का लगा। वह यह तो जानता था कि समर किसी फैक्ट्री में काम करता है लेकिन मजदूरी करता है इसकी जानकारी नहीं थी। स्नातक पास युवक दिल्ली जैसे शहर में आकर किसी कारखाने में मजदूरी करे इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। हकीकत का सामना होते ही उसके भी सपने भरभरा का बिखर गए...।

समर बी.ए. पास है फिर उसे नौकरी क्यों नहीं मिली? वह जो काम कर रहा है उसे तो अपनढ़ भी कर सकते हैं? फिर पढ़े-लिखे होने का क्या मतलब? अमर के दिमाग में यह सवाल उठे थे। मेरा क्या होगा? यह सवाल उसके दिमाग में किसी तूफान की तरह आया था। मुझे भी मजदूरी करनी पड़ेगी? यह काम मुझसे नहीं हो पाएगा।

फिर क्या करेगा? यही तो नहीं मालूम था अमर को। उसे अपने एक रिश्तेदार की बातें याद आईं।

- आगे चलकर क्या करना है अमर? रिश्तेदार ने पूछा था।

- कुछ भी। अमर का जवाब था।

दरअसल, उसे पता नहीं था कि आगे चलकर क्या करना है। वह तो सोचता था कि गांव में पढ़ाई करनी है फिर किसी शहर जाकर कोई काम कर लेना है। एक सम्मान जनक नौकरी उसका सपना थी। लेकिन कैसी नौकरी, कैसा काम, इसके बारे में उसने कभी सोचा नहीं था।

अक्सर संतान के सपने उसके मां-बाप के सपनों से जुड़े होते हैं। अमर के मां-बाप का सपना अपने बेटों के लिए एक नौकरी से अधिक नहीं था। यही कारण था कि अमर भी अपने सपने को आगे नहीं बढ़ा पाया। उसके सपनों में कभी इंजीनियर या डॉक्टर बनने की बात आई ही नहीं। इसका एक कारण उसकी आर्थिक स्थिति भी थी। वह जानता था कि इंजीनियर, डॉक्टर या आई.ए.एस-आई.पी.एस. बनने के लिए जो पढ़ाई और उसके लिए जो खर्च आता है वह उसके पिता के वश की बात नहीं है। इसलिए उसने अपने सपने को अपनी हकीकत के धरातल पर ही खड़ा किया था।

यह भी सच था कि उसने मजदूरी करने का सपना कभी नहीं देखा था। भाई को देखकर जो हकीकत सामने आई उससे वह चकरा गया।

- कुछ करने के लिए एक लक्ष्य होना चाहिए। एक सपना होना चाहिए और उसे पाने का जोश व जुनून होना चाहिए। अमर के रिश्तेदार ने आगे कहा था। अपने इस रिश्तेदार को अमर कोई जवाब नहीं दे पाया। बदले में रिश्तेदार ने ही कहा था।

- सेना में भर्ती होना है या पुलिस में? आई.ए.एस. बनना है या पी.सी.एस.। वकील बनना है या डॉक्टर। इंजीनियर बनना है या एकाउण्टेंट

इनमें से कई शब्द ऐसे थे जिन्हें अमर ने पहली बार सुना था। वह तो इतना जानता था कि पढ़ाई-लिखाई करने के बाद नौकरी मिल जाती है। वही वह कर रहा था लेकिन उसे नहीं पता था कि क्या पढ़ाई करने पर कौन सी नौकरी मिलती है। हां, इतना जरूर जानता था कि सेना और पुलिस में भर्ती होने के लिए जुगाड़ और रिश्वत देने

की जरूरत होती है। यह भी जानता था कि उसके पास कोई सिफारिश नहीं है। न ही रिश्वत देने के लिए पैसे। आई.ए.एस.-आई.पी.एस. के बारे में उसे जानकारी जरूर थी। वह जानता था कि इसे पढ़ाई में बहुत तेज रहने वाले युवक ही हासिल कर पाते हैं। इसके लिए भी शहर यानी इलाहाबाद और दिल्ली आदि जाकर पढ़ाई करनी पड़ती है।

पढ़ाई में वह औसत था और आर्थिक स्थिति औसत से भी ज्यादा खराब। इसलिए इनके बारे में उसने सोचा ही नहीं। डॉक्टर और इंजीनियर कैसे बनते हैं, उसे मालूम ही नहीं था।

उसका सपना था कि पढ़-लिखकर कमाने लगे, जिससे उसके घर के आर्थिक हालात ठीक हो जाएं। गिरवी रखे खेत छुड़वा ले और मां-बाप फटे-पुराने कपड़े पहनने को मजबूर न हों। पिता को उधार मांग कर किसी के सामने शर्मिंदगी न उठानी पड़े।

अमर भाई के कमरे पर गया तो उसे फिर एक आघात लगा। छोटा सा कमरा था। जिसमें से अजीब सी बदबू आ रही थी। ऐसी बदबू से उसका सामना पहली बार हुआ था। इस कमरे में अपने तीन साथियों के साथ समर रहता था। अब चौथा अमर आ गया था। चार लोग इसमें कैसे रह लेंगे? अमर ने खुद से पूछा था।

कमरा ऐसे मकान में था जो दो मंजिला था। इसमें ऐसे ही कई कमरे थे और सभी में किरायेदार रहते थे। कुछ परिवार के साथ तो कुछ अकेले तो कुछ तीन-चार के साथ। कम से कम बीस कमरों वाले इस मकान में लैट्रिन-बाथरूम एक ही था। वह भी इतना गंदा कि उसमें जाने की अमर की इच्छा ही नहीं हुई।

इस इलाके के अधिकतर मकानों का ऐसा ही हाल था। यहां रहने वाले लोग सुबह-शाम बोतल में पानी लेकर दिशा-मैदान के लिए यमुना के किनारे स्थित खेतों में जाते थे। खेत बहुत कम खाली रहते। लोग किसी तरह जगह तलाशते और टट्टी के ऊपर टट्टी करते। अमर को बड़ी घिन आती। टट्टी के मारे पैर रखने की भी जगह न मिलती। ऐसा शौच करना उसके लिए काफी पीड़ादायक था। वह जगह की तलाश में दूर तक चला जाता लेकिन ऐसी जगह उसे न मिलती जहां वह बिना घिन के शौच कर सके। जब कभी खेत खाली होते तो सुविधा हो जाती लेकिन खेतों में फसल होती या जुताई-बुवाई चल रही होती तो काफी दिक्कत होती।

अमर तो पुरुष था बिना आड़ के चार लोगों के सामने भी बैठकर शौच कर लेता लेकिन औरतों का हाल